अतीत से प्रेरणा लेकर विकास की ओर अग्रसर हों : आचार्य महाश्रमण

रतनगढ़ : 15 जनवरी 2011

अहिंसा प्राणी मात्र का कल्याण करती है। अहिंसा धर्म हमे ा है, था और हमे ा रहेगा। जैसे राम नाम सत्य है, क्यों बोलते है ? क्योंकि यह कल्याणकारी है, यही सत्य है, साथ चलने वाला है। वैसे ही अहिंसा सत्य है, हमें इस जीवन के लिए व परलोक के कल्याण के लिए अहिंसा की साधना करनी चाहिए। उक्त धर्मोपदे ा राश्ट्रसंत आचार्य महाश्रमण ने गोल्छा ज्ञान मंदिर के प्रांगण में त्रिदिवसीय वर्धमान महोत्सव के पहले चरण के अंतर्गत 'अतीत के संदर्भ में तेरापंथ' पर परिचर्चा के दौरान दिया।

आचार्य महाश्रमण ने कहा कि साधु की कसौटी अहिंसा व क्षमा होनी चाहिए। साधु आवे ा में ना आए अगर आए तो यह साधु की दुर्बलता है, इसे त्यागना चाहिए।

वर्धमान भाब्द की परिभाशा देते हुए उन्होंने बताया कि वर्धमान भगवान महावीर का नाम था। साधु–साध्वियों की उपस्थिति में वृद्धि होने से यह नाम सार्थक होता है। विकास की नई प्रेरणा मिलती है। तेरापंथ का अतीत बहुत सुन्दर रहा है। वि. सं. 2017 की आशाढ़ पूर्णिमा तक दो भाताब्दियों को तेरापंथ का अतीत माना जा सकता है। तेरापंथ की तीसरी भाताब्दी (वर्तमान) भी अच्छी होगी।

भिक्षु व जयाचार्य वांग्मय को तेरापंथ का भास्त्र बताते हुए उन्होंने कहा कि इसे आत्मसात करने का प्रयास करें। धर्मसंघ में अनेक साधु–साध्वियों ने बड़ी सेवा की है। संघ की एकता के लिए आचार्यों ने भी सेवा की है। श्रावकों ने भी भासन की सेवा की है। श्रावक के मन में सेवा, आत्मनिश्ठा के भाव का विकास होना चाहिए। तन, मन, वचन व भाक्ति संघ की सेवा में अर्पित करें।हम अतीत से प्रेरणा लेकर वर्तमान को सुधार सकते है। हम अतीत के आलोक में अर्तमान को आलोकित कर विकास की दि ा में आगे बढ़ सकते है।

इससे पूर्व भासनगौरव साध्वी राजीमती, साध्वी विमलप्रज्ञा व मुनि सुखलाल स्वामी ने तेरापंथ की अतीत की उपलब्धियों के बारे में धर्मसम्मेलन को संबोधित किया। इस अवसर पर विधायक राजकुमार रिणवां, कांग्रेस नेता रफीक मंडेलिया, अभिनेश महर्शि, इन्द्राज खीचड़ व ि ाक्षाविद् चम्पालाल उपाध्याय,सहित अनेकों गणमान्य नागरिकों ने प्रवचन का लाभ लिया। कार्यक्रम का संचालन मुनि मोहजीत कुमार ने किया।

रणजीत दूगड़
संयोजक मीडिया समिति
+91 9831017467
rs_dugar@yahoo.com